ISSN – 2347-7075
Impact Factor– 8.141

International Journal of Advance and Applied Research

Special Issue On

"Relevance of Swami Dayanand Saraswati & Indian Nationalism"

January- February 2025

Volume-6 Issue-7

Executive Editors
Dr. Priti D. Pohekar
Dr. T. B. Puri

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE AND APPLIED RESEARCH
ISSN – 2347 -7075 (DOUBLE-BLIND Peer Reviewed) (Bi-Monthly Research Journal)
Vol. 6 No. 7 *(Part - B)*
January – February 2025

TABLE OF CONTENT

Sr. No.	Name of Author	Title of Paper	Page No.
51	Dr. Shrishialya Tukaram Todkar	Swami Dayanand Saraswati's Contribution to Women's Empowerment	210 - 213
52	Dr. Ashwin Ranjanikar	Swami Dayanand Saraswati: Social Thought and Work	214 - 216
53	Dr. Ghuge Rahunandan Baburao	Swami Dayananda Saraswati and Arya Samaj: Liberation of Hyderabad Movement	217 - 219
54	Dr. Mane Sachin Babruvan	Swami Dayanand Sarswati and Law	220 - 224
55	Dr. Milind Yuvraj Mane	Swami Dayanand Saraswati and Women Empowerment	225 - 228
56	Dr. Prashant K Pathak Bharatsingh Prakash Singh Thakur	Swami Dayananda Social Reformer and a Sculptor of Humanity	229 - 232
57	Prof. Dr. Rajesh Kachru Gaikwad	Swami Dynand Saraswati and his Contribution to India	233 - 237
58	Dr. Sanjay Pandharinath Gaikwad	Swami Dayanand Saraswati's Contribution to Political Thought	238 - 242
59	Dr. Trupti Savleram Padekar	Swami Dayanand Saraswati's Thought on Women Education and Empowerment	243 - 246
60	Mr. Harshal Chalwadi	Educational Thoughts and Contributions of Swami Dayanand Saraswati	247 - 249
61	Rohit Balkrishna Thosar	ARYA SAMAJ – Work and Reforms Perspective	250 - 252
62	गंगा शिवाजी यरोळकर	स्वामी दयानंद सरस्वती के सामाजिक विचार	253 – 256
63	डॉ. मानीतकुमार अमृतराव वाकळे	स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक विचारों की आधुनिक युग में प्रासंगिकता	257 - 262
64	डॉ. युवराज राजाराम मुळये	हिंदी साहित्य के विकास में महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान	263 - 266
65	डॉ. गंगाधर बालन्ना उषमवार	स्वामी दयानंद सरस्वती की स्त्री विमर्श संबंधी दृष्टिकोन	267 - 270
66	प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ	महर्षि दयानंद सरस्वती जी का राष्ट्रवाद और स्वराज्य की अवधारणा	271 - 276
67	प्राचार्य. डॉ. वीरेन्द्रकुमार शास्त्री	स्वामी दयानंद सरस्वती और वर्ण व्यवस्था	277 - 279
68	प्रा. डॉ. दीपक शिवलिंगराव फुलारी	स्वामी दयानंद सरस्वती यांचे शासन आणि कायद्यांविषयी विचार	280 - 283
69	प्रा. डॉ. तात्या बाळकिसन पुरी	स्वामी दयानंद सरस्वती यांचे राजकीय विचार	284 - 289
70	डॉ. रवींद्र कोंडीराम काळे डॉ. मोरे संजय दिनकर	स्वामी दयानंद सरस्वती यांचे राजकीय विचार	290 - 292
71	डॉ. विलास आबासाहेब नरवडे	स्वामी दयानंद सरस्वती यांचे विचार	293 - 299
72	डॉ. श्रीधर आघाव	स्वामी दयानंद सरस्वती यांचे राजकीय विचार	300 – 305
73	डॉ. सुवर्णा अंकुशराव वाघुले	स्वामी दयानंद सरस्वती : आर्य समाज व शैक्षणिक तत्त्वज्ञान	306 - 311
74	परमेश्वर भागीनाथ काळे	आर्य समाजाचे शैक्षणिक विचार व कार्ये	312 - 314
75	प्रा. डॉ.नयनकुमार आचार्य	समग्र सुधारणेचे अग्रदूत - महर्षी दयानंद	315 - 318

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.6 No.7 January - February - 2025

महर्षि दयानंद सरस्वती जी का राष्ट्रवाद और स्वराज्य की अवधारणा

प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय, धाराशिव – ४१३५०१ (महाराष्ट्र)
Corresponding Author –प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ
DOI - 10.5281/zenodo.14792677

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्।
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो
जायताम्।
दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा।
जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो
जायताम्।
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न
ओषधयः पच्यन्ताम्।
योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ [१]

अर्थात् - हे महतो महान् परमेश्वर ! हमारे राष्ट्र में ब्राह्मण ब्रह्मतेज से युक्त हों, वे ज्ञान-दीप्ति से दीप्त हों। ब्राह्मण कौन है? ब्राह्मण के घर में उत्पन्न होने वाले को ब्राह्मण नहीं कह सकते। ब्राह्मण बनता है साधना से। ब्राह्मण नाम है उन ऋषियों, मुनियों और मेधावियों का जो राष्ट्र को सन्मार्ग दिखाते हैं। सच्चे ब्राह्मण ही 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि' कर सकते हैं।

क्षत्रीय शूरवीर,शस्त्रास्त्र चलाने में निपुण, शत्रुओं को उद्विग्न करने वाले और महारथी हों। आन्तरिक और बाह्य शत्रुओं से युद्ध करने के लिए तथा देश की रक्षा के लिए राष्ट्र में क्षत्रिय वीर हों।

प्रभूत दूध देने वाली गौएँ हों। देश के नागरिकों को स्वस्थ हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ बनाने के लिए राष्ट्र में गौएँ होनी चाहिएँ। जो राष्ट्र गो-दुग्ध और गो-दुग्ध से बने पदार्थों का सेवन करते हैं वे प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करते हैं। बैल भार उठाने वाले हों। घोड़े शीघ्रगामी हों।

स्त्रियाँ नगर की रक्षिका हों। इस यज्ञशील राष्ट्र का युवक सभा-सञ्चालन में कुशल, विजयशील, वीर और महारथी हो। हमारी इच्छानुसार वृष्टि हो। ओषधियाँ हमारे लिए फलवती होकर पकें। हमारा योग-क्षेम सिद्ध हो। [२]

अप्राप्त की प्राप्ति का नाम है योग और प्राप्त वस्तु के रक्षण को क्षेम कहते हैं। भाव यह है कि राष्ट्र की आवश्यकताएँ सुगमता से पूर्ण होती रहें। आदर्श राष्ट्र के लिए यहाँ दस बातें कही गई हैं। सारे संसार के साहित्य को देख जाइए। आदर्श राष्ट्र की इससे सुन्दर,भव्य, और श्रेष्ठ कल्पना हो ही नहीं सकती। भारतमाता के नौनिहालों को, युवक और युवतियों को इन उपदेशों को हृदयंगम कर लेना चाहिए। राष्ट्र-रक्षा का उत्तरदायित्व देश के युवक और युवतियों पर ही निर्भर है।

सन १८५७ के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर सन १९६१ के गोवा मुक्ति संग्राम तक सर्वाधिक अर्थात् अस्सी प्रतिशत से भी अधिक योगदान महर्षि दयानंद सरस्वती जी और उनसे प्रभावित आर्य कार्यकर्ताओं का रहा है। लाहौर के एक वयोवृद्ध समाजसेवी तथा अनुभवी पत्रकार श्री.

वासुदेव ने एक निबंध में लिखा है कि – " ब्रिटिश सत्ता के उन्मूलन के लिए १८५७ ई. में जो राज्य-क्रान्ति हुई उसमें महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। "[३]

अपने दीक्षागुरु स्वामी पूर्णानंद जी से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा भारतीयों पर किये जा रहे अत्याचारों के समाचार सुनकर महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने तत्कालीन भारतीय रियासतों (संस्थानों) के प्रमुख सेनानियों से संपर्क कर प्रथम स्वाधीनता संग्राम का बिगुल बजा दिया था। विशेषकर मराठा साम्राज्य के प्रतिनिधि नानासाहब पेशवा और तात्या टोपे के साथ महर्षि दयानंद सरस्वती जी के घनिष्ठ सम्बन्ध थे तथा कंपनी सरकार पर पहली गोली दागनेवाले बैराकपुर सैन्यावास के मंगल पांडे ने दयाराम (महर्षि दयानंद सरस्वती जी) से आशीर्वाद माँगा था।[४]

आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री ने अपने ग्रन्थ में लिखते हैं – " यह एक बुद्धिग्राह्य तथ्य है कि भारत के इस प्रथम विशाल स्वातंत्र्य संग्राम के आयोजन एवं नेतृत्व में स्वामी पूर्णानंद, विरजानंद और दयानंद इन तीनों साधुओं का गहरा हाथ रहा, चाहे वह सशस्त्रक्रान्ति युक्त न होकर वचनमात्र रहा हो। "[५]

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के शिष्य स्वामी श्रद्धानंद जी के पुत्र इंद्र विद्यावाचस्पति जी ने लिखा है कि – " सन १८५७ के क्रान्ति के पश्चात के उन महापुरुषों की सूची में जिन्हें हम उस क्रान्ति के मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उत्तराधिकारी कह सकते हैं तो पहला नाम महर्षि दयानंद सरस्वती का है। "[६]

इसी ग्रन्थ में वे आगे लिखते हैं – "राजनीति में महर्षि दयानंद सरस्वती जी को नवीन राष्ट्रीयता का अग्रदूत कहें, तो अत्युक्ति नहीं होगी। उन्होंने अपने मुख्य ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश ' में स्वराज्य, स्वदेशी, स्वभाषा और स्वदेश के पक्ष में जो स्पष्ट विचार प्रकट किये थे, वे भारत की राजनीति में १९०१ से पहले व्यक्त रूप में नहीं आये थे, व्यावहारिक रूप में उनका प्रयोग तो बंगविच्छेद के पश्चात् की हुआ। "[७]

श्री. सत्यदेव विद्यालंकार ने भी अपनी पुस्तक 'राष्ट्रवादी दयानंद' में इसी तथ्य की पुष्टि करते हुए लिखा है – " इस देश में अंग्रेजी राज्य के स्थापित होने के बाद वे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने देशवासियों के हृदय में स्वाभिमान और स्वदेशाभिमान के दीपक को बुझते-बुझते बचा लिया। "[८]

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अपने व्याख्यानों, प्रवचनों, लेखों, पत्रों और पुस्तकों के माध्यम से इसी भाव को सदैव अभिव्यक्त किया है। उन्होंने अपनी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखा है कि – " कोई कितना ही करें परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है, अथवा मतमतांतर के आग्रहरहित अपने और पराए का पक्षपातशून्य प्रजा पर माता-पिता के सामान कृपा, न्याय, और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। "[९]

महर्षि दयानंद सरस्वती जी अपने यजुर्वेद भाष्य में लिखते हैं – " हे महाराजाधिराज परब्रह्मन् ! अखंड चक्रवर्ती राज्य के लिए शौर्य, धैर्य, नीति, विनय, पराक्रम और बलादि उत्तमगुणयुक्त कृपा से हम लोगों को यथावत् पुष्ट कर, अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी ना हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों। "[१०]

महर्षि दयानंद सरस्वती जी अपनी पुस्तक आर्याभिविनय में लिखते हैं – " हे न्यायकारिन्, जो कोई हम धार्मिकों से शत्रुता करता है, उसको आप भस्मीभूत करें, और विद्या, शौर्य, धैर्य, बल, पराक्रम, चातुर्य, विविध धन, ऐश्वर्य, विनय, साम्राज्य, सम्मति, सम्प्रीति तथा स्वदेशसुखसम्पादनादि गुणों से युक्त करके हमको सब देहधारियों में उत्तम बनाएँ और सबसे अधिक आनंदभोग करने, सब देशों में इच्छानुकूल विचरने, और आरोग्य देह, शुद्ध मानसबल तथा विज्ञान आदि की प्राप्ति के लिए हमको सब विद्वानों के मध्य प्रतिष्ठायुक्त करें। "[११]

इसी पुस्तक में वे आगे लिखते हैं – " हे महाधनेश्वर ! हमारे शत्रुओं के बल पराक्रम को (आप)

सर्वथा नष्ट करें, आपकी करुणा से हमारा राज्य और धन सदा वृद्धि प्राप्त हो। "[१२]

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के व्याख्यान कोलाकाता में दिसंबर १८७२ से मार्च १८७३ के बीच आयोजित किये गये थे। उनके व्याख्यान सुननेवालों में एक दिन तत्कालीन वायसराय लॉर्ड नॉर्थ ब्रुक भी आये थे, वे महर्षि दयानंद सरस्वती के व्याख्यानों से प्रभावित तो हुए पर जाने-अनजाने उन्होंने उनसे ब्रिटिश राज की प्रशंसा करने के लिए कहा। तब महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने वाइसराय नॉर्थ ब्रुक से कहा – " राजन् ! मैं तो प्रतिदिन प्रात: काल उठकर अपने परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि शीघ्रातिशीघ्र यह राज्य भारत से उठ जाए, मैं तो शीघ्र ही वह दिन देखना चाहता हूँ जब कि भारत का शासन सूत्र हम भारतीयों के हाथ में हो। "[१३]

इसके उपरांत महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने भारतीय रियासतें जो सन १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय रही हाथरस, मुरसान, अलवर, भरतपुर, करौली, ग्वालियर, जयपुर शांत रहीं, उनकी ओर ध्यान दिया। राजस्थान की एक रियासत में ही 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखा गया था। उदयपुर महाराणा सज्जनसिंह, इंदौर नरेश सयाजीराव होलकर, मसूदा नरेश, शाहपुरा नरेश केसरसिंह, इदर नरेश कर्नल महाराजा प्रताप सिंह, बडौदा नरेश सयाजीराव गायकवाड, उदयपुर नरेश महाराणा फतहसिंह आदि के गुरु के रूप में अंग्रेजों के विरोध में असंतोष जगाने का कार्य किया।

भारतवर्ष को स्वाधीनता प्राप्त करने के पवित्र उद्देश्य से जिन-जिन संगठनों ने प्रयास किये चाहे वह काँग्रेस, हिन्दू महासभा, हिन्दुस्तान सोशालिस्ट रीपब्लिकन आर्मी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हो या अन्य कोई भी सभी के सशस्त्र या निशस्त्र आन्दोलनों में आर्य समाजियों ने खुलकर सहभाग लिया।

अंग्रेज अधिकारी एलन ह्युम ने काँग्रेस की स्थापना चाहे जिस उद्देश्य से की हो पर धीरे-धीरे यह संगठन भारतीय राजनीति के केंद्र में आता गया और इसमें लाला लाजपत राय, प. गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे अनेक आर्य समाजी नेताओं को १८८३ में काँग्रेस अधिवेशन में सादर निमंत्रित किया था। महादेव गोविन्द रानडे, जो महर्षि दयानंद सरस्वती की मराठी शिष्य थे, उनके शिष्य गोपाळ कृष्ण गोखले थे और गोखले जी के शिष्य महात्मा गांधीजी थे, इस तर्क से महर्षि दयानंद सरस्वती जी आधुनिक भारत के राष्ट्र पितामह सिद्ध होते हैं। गांधीजी को सर्वप्रथम महात्मा की उपाधि से स्वामी श्रद्धानंद जे ने ही ज्वालापुर आर्ष गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में दी थी। इससे पूर्ण स्वामी श्रद्धानंद जी ने ही मिस्टर मोहनदास करमचंद गांधीजी के दक्षिण अफ्रिका के आन्दोलन के लिए उस जमाने में ब्रह्मचारियों की परिश्रम से प्राप्त १५०० रूपये भी गोखले जी के माध्यम से गांधीजी को भिजवा दिए थे। [१४]

लाला लाजपत राय, गुरुदत्त विद्यार्थी जी और लाला हंसराज इन तीन आर्य समाजी मित्रों ने लाहौर में दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना की। भारतीय राजनीति में लाल-बाल-पाल तराई में लाला लाजपत राय ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। बाल गंगाधर तिलक ने स्वराज्य की प्रेरणा महर्षि दयानन्द सरस्वती से ही पाई थी। बिपिनचंद्र पाल ने भी बंगाल में इन राष्ट्रवादी विचारों की अलख जगाई थी। काँग्रेस से मोहभंग हो जाने पर लाला लाजपत राय ने नेशनल पार्टी की स्थापना की थी। क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध लाला हरदयाल, भाई परमानंद और सरदार अजीतसिंह से भी इनके सम्बन्ध रहे। साइमन चले जाओ आन्दोलन में लाठियों की बौछार से आपकी मृत्यु हुई। जिसका प्रतिशोध भगतसिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, सुखदेव थापर और राजगुरु ने लिया। [१५]

स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, वैद्य गुरुदत्त अरोरा, श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वातंत्र्यवीर सावरकर, मदनलाल धींगरा, लाला हरदयाल, चाफेकर बंधु, रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगत सिंह, यशपाल, चंद्रशेखर आज़ाद, बारींद्र घोष (योगी

अरविंद की अनुज), भूपेन्द्रनाथ दत्त (स्वामी विवेकानन्द के अनुज) सचिन्द्रनाथ सान्याल, यशपाल, जो आगे चलाकर हिंदी साहित्य के बहुत बड़े लेखक के रूप में लोकप्रिय हो गये, स्वयं गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के छात्र रहे। हंसराज वायरलैस, पं. लेखराम वैद्य, पं. जयचंद विद्यालंकार, बहन श्रीमती पार्वती, मुंशीराम शर्मा सोम, पं. सत्यकाम विद्यालंकार, श्री. कृष्ण जी, ठाकुर यशपाल सिंह, स्वामी भीष्म. कवि चंद्र, सुशीला देवी, दुर्गा भाभी, चंद्रवती चौधरी, भगवतीचरण बोहरा, चंद्रशेखर आज़ाद, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, प्रि. भगवान दास, बाबा गुरुमुख सिंह, सेठ रामनारायण बर्मानी, कालूराम आर्य, महाशय कृष्ण जी, स्वामी सोमदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, पं. गेंदालाल दीक्षित, अशफाक उल्ला खान, ठाकुर रोशन सिंह, अभिलाषचंद्र, भाई बालमुकुन्द, प्रताप सिंह बारहट, बलराज, जगतराम हरियाणवी, सोहनलाल पाठक, भाई परमानंद, इंद्र विद्यावाचस्पति, महाशय कृष्ण, महाशय वीरेंद्र, डॉ. सत्यपाल, रत्नचंद, खुशहाल चंद, यश, भीमसेन सच्चर, गोपीचंद भार्गव, गोकुलचंद नारंग, देवीचंद, लाला रामप्रसाद, प्रबोधचंद्र, जगत नारायण, आत्मानंद, रायजादा, देवराज, अल्गुराय शास्त्री, चौधरी चरणसिंह, चंद्रभानु गुप्त, गोविन्द वल्लभ पंत, लाल बहादूर शास्त्री, जयानंद भारती, शिवदयालु, शेरसिंह, रामेश्वरानंद, नरदेव शास्त्री, अभेदानंद, घनश्याम गुप्त, देशबंधु गुप्त, पं. दामोदर सातवलेकर, महारानी शंकर, प्रकाशचंद्र, चन्द्रसिंह, रासबिहारी तिवारी, सत्यपाल विद्यालंकार, ज्ञानी पिंडी दास, भगवान देव, कुँवर सुखलाल, सत्यदेव परिव्राजक, चन्द्रावती लखनपाल, सुखदादेवी शारदा [१६] आदि कितने नाम लें और हैदराबाद मुक्ति संग्राम में बलिदान होनेवाले वीरों के नाम जिन्होंने स्वराज्य, स्वदेश, स्वधर्म, स्वभाषा और स्वराष्ट्र की बलिवेदी पर स्वयं को स्वाहा करवा दिया।

उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भिक भारत की गणना विश्व के उन राष्ट्रों में की जाती थी, जहाँ राष्ट्रवाद की संभावनाएँ प्राय: शून्य समझी जाती थी। इस देश के विशाल जनसमुदाय धर्म, भाषा, जाति और राजनीतिक दृष्टि से अलग-अलग भागों में विभाजित होने के कारण अंग्रेजों ने भारत में अपनी सत्ता स्थापित करने में इन्हीं तत्वों की सहायता ली। उन्हें इस बात का अंदेशा था कि वे भारत में तब तक शासन करने में सफल रहेंगे जब तक भारतीयों में आपसी मतभेद बना रहे। इस कारण इस काल में भारतवर्ष अपनी प्रतिष्ठा, उन्नति और वैभव को खोकर सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक अधोगति की धारा में तेजी से प्रवाहित हुआ।

उन्नीसवीं शताब्दी भारतीय राष्ट्रवाद के उत्थान का काल रहा है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी उन्नीसवीं शताब्दी के प्रमुख भारतीय समाज सुधारक और विशुद्ध राष्ट्रवादी थे। जिनका राष्ट्रवादी चिंतन मूल्यों, आदर्शों एवं देशहित पर केंद्रित था। वे समाज का उत्थान प्रत्येक क्षेत्र में चाहते थे। जिसका प्रधान लक्ष्य राष्ट्रहित था। महर्षि दयानंद सरस्वती भारतवर्ष के राष्ट्रीय गौरव का बहुत सम्मान करते थे। उनका हृदय राष्ट्रवाद के लिए अत्यधिक प्रेरित था तथा वे स्वतंत्रता के लिए अत्यधिक व्याकुल थे। महर्षि दयानंद सरस्वती का मन देशप्रेम और जनसेवा में सर्वाधिक रुचि लेता था, इसलिए उन्होंने देश हित में उन गतिविधियों को महत्वपूर्ण मानकर स्वीकार किया। जिसके द्वारा भारतवर्ष में राष्ट्रवादी स्वराज्य का संदेश जन- जन तक पहुंचाया जा सके। [१७]

महर्षि दयानंद सरस्वती का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत एव शिक्षाएं राष्ट्र निर्माण पर आधारित थी। वे ऐसे युग-पुरुष थे, जो आत्मशासित एवं आत्मावलम्बी थे। उन्होंने किसी के सिद्धांत का अनुसरण नहीं किया, अपितु स्वयं द्वारा प्रतिपादित नवीन मार्ग का सृजन किया। महर्षि दयानंद सरस्वती जी अन्वेषी व्यक्ति थे, जो अपने मार्ग को दिशा देने का कार्य स्वयं करते थे। इसी दृढ़ निश्चय के आधार पर वे भारतवर्ष का सम्पूर्ण उत्थान चाहते थे। [१८]

महर्षि दयानंद सरस्वती जी भारतीय राष्ट्रीय एकता, स्वराज्य भावना और राष्ट्रवाद के अग्रदूत थे। वे आर्य जीवन पद्धति के दृष्टिकोण से भले ही एक सन्यासी थे किन्तु उन्होंने चतुर्थाश्रम की सभी मर्यादाओ का पूर्ण रूपेण पालन किया था। भारतवर्ष के संन्यासियो से त्याग, वैराग्य, परलोक-चिंतन आदि की अपेक्षा की जाती है, किन्तु उनसे यह उम्मीद नहीं की जाती कि वे समाज मे फ़ैली व्यापक समस्याओं, आडम्बरों और देश के सम्मुख उपस्थित ज्वलंत समस्याओं के समाधान के लिए अपना योगदान देंगे, परन्तु महर्षि दयानंद सरस्वती जी इसके अपवाद सिद्ध हुए। महर्षि दयानंद सरस्वती जी एक संन्यासी होते हुए भी प्रखर राष्ट्रवादी भी थे। वे इस बात को समझ चुके थे कि जब तक स्वदेश जनों में आत्मविश्वास और बल नही बढ़ेगा तब तक देश की उन्नत्ति संभव नहीं है, जिसके लिए उन्होंने देश में स्वराज्य प्राप्ति की भावना को प्रबल करने का कार्य किया।[१९]

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के सन्दर्भ में वास्तविकता भी यही है कि उनके वीरोचित व्यक्तित्व में भारतीय राष्ट्रवाद की एक प्रबल धारा अविरल रूप से प्रवाहित हो रही थी। उनका सामाजिक एवं धार्मिक सुधार भी वस्तुत: राष्ट्रीय शक्ति की पुनर्स्थापना का ही एक साधन था। परतंत्र भारत की स्थिति का अध्ययन करने के पश्चात महर्षि दयानंद सरस्वती जी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सामाजिक एवं धार्मिक जीवन के अबौद्धिक कर्मकांडों के कुचक्र में फँसकर भारत राजनीतिक दृष्टि से भी निर्बल हो चुका है। उदाहरण के रूप में महमूद गजनी की सफलता का बड़ा कारण यह था कि पापों (स्वयं को पंडित माननेवाले मूर्ख कर्मकांडियों) ने तत्कालीन क्षत्रियों और राजाओं को भ्रमित कर दिया था। उन्होंने उनसे कहा कि जब मुस्लिम आक्रान्ता सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण करने आगे बढ़ेंगे तो चमत्कार होगा और स्वयं महादेव हमारी रक्षा करेंगे। महर्षि दयानंद सरस्वती जी इस घटना पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि, " जब महमूद गजनी आकर खड़ा हुआ तो यह चमत्कार हुआ कि उनका मंदिर तोड़ दिया गया, पुजारी भक्तों की दुर्दशा हो गयी। पुजारियों ने इन पाषाणों की इतनी भक्ति की परन्तु एक भी मूर्ति उड़कर उनके सर पर नहीं लगी। इससे बेहतर यह होता कि यदि किसी शूरवीर पुरुष की इन मूर्तियों के सामान सेवा करते तो वह सेवकों को यथाशक्ति बचाता और उन शत्रुओं को मारता।[२०]

महर्षि दयानंद सरस्वती जी का यह एक सन्देश था कि अंधविश्वासों की कसौटी पर कभी भी राष्ट्रीय उत्थान नहीं हो सकता है, अत: उन्होंने सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों के साथ भारतीयों को वीरता पूर्वक अन्यायपूर्ण शासन व्यवस्था से लड़ने के लिए भी प्रेरित किया, जिससे वे भाग्यवादी बनकर अत्याचार के मूक दर्शक न बनें, बल्कि सम्पूर्ण शक्ति के साथ उनका मुकाबला करें।

महर्षि दयानंद सरस्वती के भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना का संचार करने के लिए भारतीय प्रजा के सम्मुख आर्यावर्त अर्थात भारतवर्ष के महत्ता का महिमामंडन किया, जिससे भारतीयों में राष्ट्रीयता का भावना विकसित हो सके। वे कहते थे कि जब विनाश के दिन आते हैं तो मानव की बुद्धि भी विपरीत हो जाती है। जब-जब वेदों की हानि और वेद विरुद्ध आचरण किया गया, तब-तब मानव जीवन कठिनाइयों में पड़ जाता है। महाभारत युद्ध के बाद वैदिक धर्म के नष्ट होने के कारण आपसी स्वार्थ और विरोध के कारण आर्यावर्त की अवनति हुई है। जिससे भारतीयों में स्वयं की उन्नत्ति के साथ राष्ट्र की उन्नत्ति का भाव भी समाप्त हो गया। उन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के भारत की सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं पराधीन स्थिति पर गहरा दु:ख व्यक्त किया और इसके निवारण के लिए वैदिक ज्ञान के आधार पर भारतीय प्रजा के दृष्टिकोण को नया आधार दिया। वेदों के आधार पर ही महर्षि दयानंद सरस्वती जी राष्ट्र को परतंत्रता से मुक्ति की कामना की और भारतीयों के सम्मुख राष्ट्रीय स्वाभिमान की गाथा गाकर स्वाधीनता के मार्ग का अवलंबन किया।

संक्षेप में कहें तो महर्षि दयानंद सरस्वती के पूर्व, समकालीन और पश्चात् के सभी धार्मिक-सामाजिक संगठनों जैसे ब्रह्म समाज, सत्यशोधक समाज, प्रार्थना समाज, थिओसोफिकल सोसाइटी, रामकृष्ण मिशन आदि ने धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक सुधारों में अवश्य ही योगदान किया है, किन्तु कहीं-न-कहीं उनका राष्ट्रीय सुधारों में उतना योगदान नहीं रहा, जितना महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज नामक संगठन का रहा। इतना ही नहीं कहीं-न-कहीं ये अन्य सारे संगठन पाश्चात्य विचारधारा से प्रभावित भी रहे। महर्षि दयानंद सरस्वती जी और उनके आर्य समाजी अनुयायियों ने सदैव स्वराष्ट्र, स्वराज्य, स्वभाषा, स्वधर्म, स्वदेशी और स्व-संस्कृति का परचम पूरे विश्व भर में ढंके की चोट पर प्रसारित किया। जिसका मूल उन्होंने मानवता के मूल उत्स वेदों में पाया।

सन्दर्भ सूची :

१. यजुर्वेद अध्याय २२ मंत्र २२
२. यजुर्वेद भाष्य अध्याय २२ मंत्र २२ – महर्षि दयानंद सरस्वती
३. निबंध श्री. वासुदेव, दैनिक हिन्दुस्तान १२ अगस्त १९६९, पृष्ठ ३ स्तम्भ ३
४. महर्षि की अज्ञात जीवनी – श्री. दीनबंधु शास्त्री, सार्वदेशिक साप्ताहिक १२ जनवरी १९६९
५. भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में आर्य समाज का योगदान - आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री, पृष्ठ ५ परिच्छेद ३
६. भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास – इंद्र विद्यावाचस्पति, पृष्ठ २२
७. भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास – इंद्र विद्यावाचस्पति, पृष्ठ २४
८. राष्ट्रवादी दयानंद – सत्यदेव विद्यालंकार, पृष्ठ ३२
९. सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समुल्लास – महर्षि दयानंद सरस्वती
१०. यजुर्वेद भाष्य – महर्षि दयानंद सरस्वती
११. आर्याभिविनय - महर्षि दयानंद सरस्वती, १.१६
१२. आर्याभिविनय - महर्षि दयानंद सरस्वती, १.४३
१३. दैनिक वीर अर्जुन – श्री दीवान अलखधारी का लेख, यथा उद्धृत, भारतीय स्वातंत्र्य में आर्य समाज का योगदान – आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री, हिसार
१४. भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज का विशेष (८०%) योगदान – डॉ. नरेन्द्र कुमार, डॉ. उमेश यादव, पृष्ठ ९२
१५. भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज का विशेष (८०%) योगदान – डॉ. नरेन्द्र कुमार, डॉ. उमेश यादव, पृष्ठ ९६
१६. भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज का विशेष (८०%) योगदान – डॉ. नरेन्द्र कुमार, डॉ. उमेश यादव, पृष्ठ २६१
१७. भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद – सत्या एम् .राय, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, २००९, पृष्ठ २१६
१८. महर्षि दयानंद सरस्वती – चंद्रिका प्रसाद शर्मा, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, संस्कार २०१२, पृष्ठ ८२
१९. महर्षि दयानंद का स्वराज्य चिंतन – डॉ. भवानीलाल भारतीय, सत्यधर्म प्रकाशन, राजस्थान, द्वितीय संस्करण २०००, पृष्ठ १३६
२०. सत्यार्थ प्रकाश – महर्षि दयानंद सरस्वती, भगवती प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण १९९५, पृष्ठ २०५

Bharatiya Shikshan Prasarak Sanstha`s

Kholeshwar Mahavidyalaya, Ambajogai

National Conference on "Relevance of Swami Dayanand Saraswati & Indian Nationalism"

Organized by
Department of Political Science

Sponsored By
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University,
Chhatrapati Sambhajinagar